

१८. हमारा परिवार तथा घर



करके देखो

परिवार के लोगों की संख्या और माँ तथा पिता के व्यवसाय के आधार पर अपने परिवार के लोगों की जानकारी लिखो :



- परिवार में माँ, पिता जी और बच्चों का समावेश होता है ।
- इसके अतिरिक्त कुछ परिवारों में दादा-दादी का भी समावेश होता है ।
- प्रत्येक परिवार के सदस्यों की संख्या अलग-अलग होती है ।

हम अपने परिवार में जन्म लेते हैं और बड़े होते हैं । माता-पिता हमें छोटे से बड़ा करते हैं । वे हमारी देखभाल करते हैं । परिवार में हमें सभी प्रकार की सुरक्षा प्राप्त होती है । परिवार में ही हमारे भोजन, वस्त्र तथा निवास की जरूरतें पूरी होती हैं । परिवार के अन्य व्यक्ति भी हमारी देखभाल करते हैं । परिवार के सदस्यों में परस्पर अपनापन होता है । प्यार और अपनेपन के कारण परिवार में रहना हमें अच्छा लगता है । किसी समस्या को हल करने में सब एक-दूसरे की सहायता करते हैं । कोई बीमार न पड़े, इसकी सावधानी रखते हैं । बीमार पड़ने पर हमारे माता-पिता हमारा उपचार और हमारी देखभाल करते हैं ।

छोटा परिवार और बड़ा परिवार

कुछ परिवारों में माँ, पिता जी और उनके एक या दो संतानें होती हैं । ऐसे परिवारों को हम छोटा परिवार कहते हैं । इसके विपरीत कुछ परिवारों में दादा-दादी, चाचा-चाची, सगे और चचेरे भाई तथा बहन आदि होते हैं । ऐसे परिवारों को बड़ा परिवार कहते हैं ।

विस्तारित परिवार

विस्तारित परिवार में हमारे परिवार के कई रिश्तेदारों का भी समावेश होता है । चाचा, चाची, मामा, मामी, बुआ, ममेरे भाई-बहन, मौसी इत्यादि हमारे रिश्तेदार होते हैं । इनके मेल से बनने वाले परिवार को हम विस्तारित परिवार कहते हैं । रिश्तेदारों के कारण हमारा परिवार अत्यंत विस्तार पा लेता है ।



विस्तारित परिवार

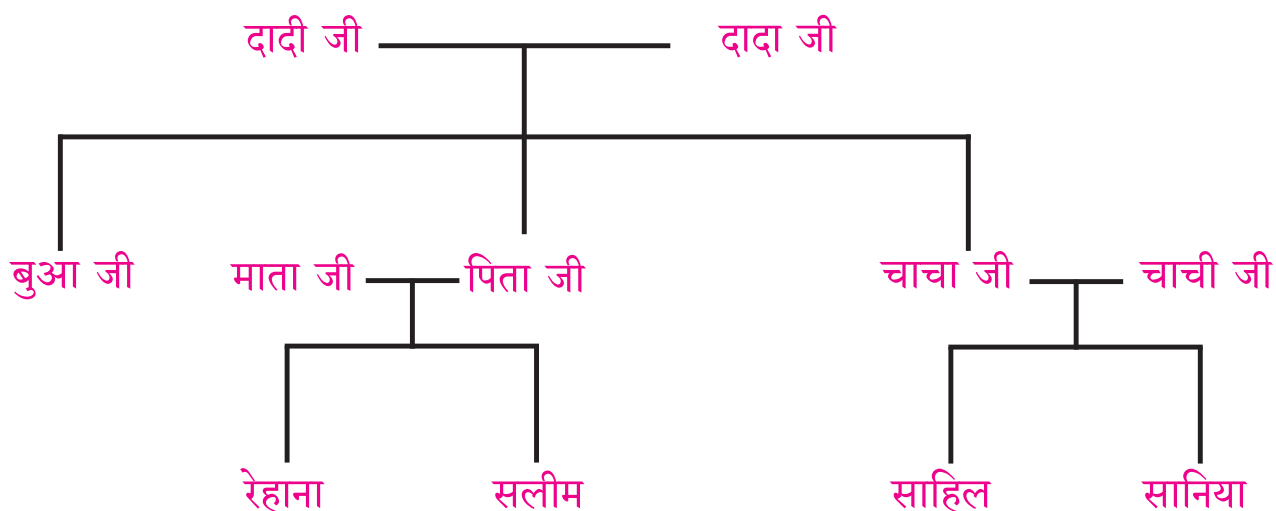
विस्तारित परिवार के सभी व्यक्ति प्रायः एक ही घर में नहीं रहते परंतु उनमें प्रेम तथा लगाव होता है। विभिन्न अवसरों पर वे एक-दूसरे से मिलते रहते हैं।

- तुम्हारे विस्तारित परिवार में कौन-कौन हैं ?
- तुम्हारा उनके साथ क्या नाता-रिश्ता है ?
- तुम्हारे विस्तारित परिवार के लोग किन अवसरों पर तुमसे मिलते हैं ?



करके देखो

वंशावली या वंशवृक्ष : तीसरी कक्षा में पढ़ने वाली रेहाना अपने घर के सदस्यों के फोटो (छायाचित्र) का एक अलबम देख रही थी। जन्मदिवस तथा विवाह जैसे अवसरों के फोटो देखने पर उसे कुछ परिचित तथा कुछ अपरिचित चेहरे दिखाई दिए। कुछ चित्रों में समाविष्ट चेहरे उसे सबके साथ दीखे। रेहाना ने माँ से पूछा, “ये सब लोग कौन हैं ?” माँ ने कहा, “ये सब हमारे रिश्तेदार हैं। इस फोटो-अलबम में चाचा-चाची, मामा-मामी, दादा-दादी, नाना-नानी हैं।” रेहाना ने माँ से कहा, “मुझे सब कुछ ठीक-से समझाकर बताइए।” रेहाना को समझाने के लिए माँ ने एक चित्र बनाया।



रेहाना की वंशावली / वंशवृक्ष

समय के व्यतीत होने पर परिवार की कई पीढ़ियाँ बनती जाती हैं। ऐसी पीढ़ियों से एक वंशावली तैयार होती है।

- तुम माँ तथा पिता जी की सहायता से अपने परिवार की वंशावली तैयार करो।

पारिवारिक संस्था में परिवर्तन

पारिवारिक संस्था में परिवर्तन होता जाता है। एक समय था; जब परिवार में दादा जी-दादी जी, माता जी-पिता जी, चाचा जी-चाची जी और अपने सगे, चचेरे भाई-बहन होते थे। उसे संयुक्त परिवार कहते थे। ये लोग एक-साथ रहते थे परंतु नौकरी, उद्योग, व्यवसाय आदि के कारण एक ही परिवार के सदस्य अलग-अलग स्थानों पर रहने लगे हैं। वहाँ उनका एक अलग परिवार बन जाता है। ऐसे परिवारों को एकल परिवार कहते हैं। इस प्रकार पारिवारिक संस्था में परिवर्तन आया है।

परिवार संबंधी हमारे काम



एक ही व्यक्ति काम कर रहा है ।

प्रत्येक व्यक्ति काम करता है ।

करके देखो

- अपने घर के कामों की एक सूची तैयार करो ।
- तुम्हारे घर में ये काम कौन करता है ?
- इनमें से कौन-से काम करना तुम्हें पसंद है ?
- क्या तुम अपने घर में एक-दूसरे के काम में सहायता करते हो ?

पानी का संचय, भोजन बनाना और स्वच्छता, ये परिवार में प्रतिदिन किए जाने वाले काम हैं । घरों में प्रायः तीज-त्योहार तथा समारोह भी मनाए जाते हैं । अतिथियों का आगमन होता है । उनका स्वागत-सत्कार करना पड़ता है । वृद्धों के स्वास्थ्य का ध्यान रखना पड़ता है । घर में ऐसे बहुत-से काम होते हैं । सब लोगों को इन्हें बाँटकर करना चाहिए । परिवार का काम सब लोग बाँटकर करें तो किसी एक सदस्य पर अधिक बोझ नहीं पड़ता । घर के सभी छोटे-छोटे काम भी महत्त्वपूर्ण होते हैं । ये काम सभी लोग प्यार तथा अपनेपन से करते हैं । हमें इन सब बातों का भी भान होना चाहिए ।

घर की स्वच्छता तथा सजावट



करके देखो

घर की स्वच्छता और उसमें सुव्यवस्था बनाए रखने के लिए जो काम करने पड़ते हैं, उनकी एक सूची बनाओ ।



व्यवस्थित घर



अस्त-व्यस्त घर

- ऊपरवाले दोनों चित्रों में तुम्हें कौन-सा अंतर दिखाई देता है, उसे अपनी कॉपी में लिखो ।

यदि हमारा घर स्वच्छ तथा व्यवस्थित हो तो हमारा मन प्रसन्न रहता है। यदि घर की सभी चीजें यहाँ-वहाँ बिखरी पड़ी हों तो कोई वस्तु समय पर नहीं मिलती। घर को स्वच्छ रखना यह परिवार के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य है। घर का कूड़ा-करकट इधर-उधर फेंकना नहीं चाहिए। उसे कूड़ेदान में ही डालना चाहिए। अपने घर के बाहर तो भूलकर भी नहीं फेंकना चाहिए। इससे पूरा परिसर स्वच्छ रखने में सहायता मिलती है।



इसे सदैव ध्यान में रखो

- घर का गीला तथा सूखा कूड़ा अलग करो। उसे दो अलग-अलग टोकरियों में डालो। गीले कूड़े से खाद तैयार की जाती है। सूखे कूड़े में से कागज, काँच, टिन के टुकड़े अलग किए जा सकते हैं। उनका पुनः उपयोग किया जा सकता है।



करके देखो

घर की सजावट करो

- * सब लोग मिलकर तय करो कि घर की सजावट कैसे करनी है।
- * जो सजावट तुम स्वयं नहीं कर सकते, उसके लिए बड़ों की सहायता लो।
- * सजावट करने के लिए तुम किस सामग्री का उपयोग करोगे ?

नीचे दी गई सजावट की सामग्री में से जिस सामग्री का अधिक उपयोग नहीं करना चाहिए ; उसके नीचेवाली चौखट में X चिह्न बनाओ। बताओ कि इनका उपयोग क्यों नहीं करना चाहिए ?

फूल

☐

थर्मोकोल

☐

प्लास्टिक

☐

पताका

☐

रंगोली

☐

रासायनिक रंग

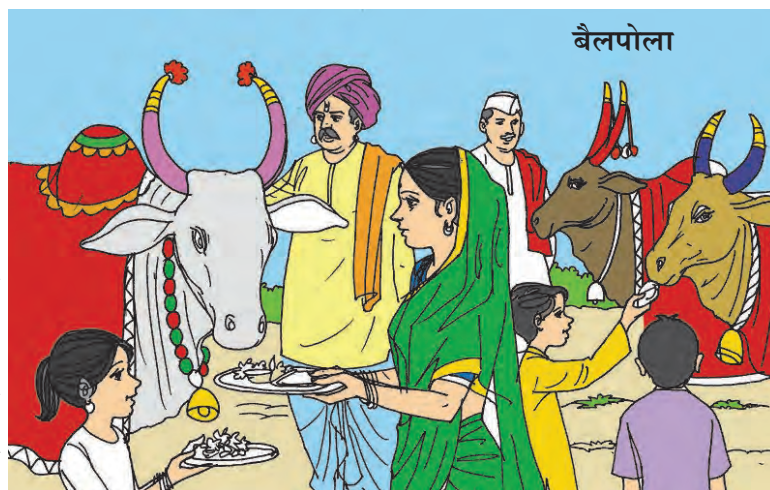
☐


बताओ तो

त्योहार – उत्सव

- * हम त्योहार-उत्सव क्यों मनाते हैं ?
- * हमारे त्योहार-उत्सव किन बातों से संबंधित हैं ?

हम अपने परिवार में बहुत-से त्योहार तथा उत्सव मनाते हैं। परिवार



में ही नहीं; अपने देश के विभिन्न भागों में भी अलग-अलग उत्सव मनाए जाते हैं। अपने देश का मुख्य व्यवसाय खेती है। हमारे बहुत से उत्सव खेती तथा पर्यावरण से संबंधित होते हैं। होली वसंत ऋतु के स्वागत का उत्सव है। पंजाब में फसलों की कटाई के समय 'वैशाखी' (बैसाखी) नामक उत्सव मनाया जाता है। महाराष्ट्र में बुआई के बाद 'बैलपोला' उत्सव मनाया जाता है। तमिलनाडु और केरल में फसलों की कटाई के समय क्रमशः 'पोंगल' और 'ओणम' नामक उत्सव मनाए जाते हैं। दशहरा, दीपावली, गुढ़ी पाड़वा जैसे उत्सव फसलों के घर में आने के बाद मनाए जाते हैं।

पर्यूषण पर्व, बुद्ध पूर्णिमा, रमजान ईद, बड़ा दिन, (क्रिसमस) पतेती भी महत्त्वपूर्ण त्योहार हैं। त्योहार तथा उत्सव चाहे कोई भी हो, सभी भारतीय उनमें खुशी से सहभागी होते हैं। एक-दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं।

'स्वतंत्रता दिवस' और 'गणतंत्र दिवस', हमारे राष्ट्रीय उत्सव हैं। ये उत्सव सभी देशवासी मनाते हैं। १५ अगस्त १९४७ के दिन हमारे देश को ब्रिटिश लोगों से स्वतंत्रता मिली। इसलिए इस दिवस को हम 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में मनाते हैं। २६ जनवरी १९५० के दिन भारतीय संविधान लागू हुआ। इसलिए इस दिवस को 'गणतंत्र दिवस' के रूप में मनाया जाता है।



उत्सव के कारण लोग इकट्ठे आते हैं। उनमें एकता की भावना बढ़ती है। उत्सव में प्रायः गीत, नृत्य, रंगोलियाँ, खेल, स्पर्धा, प्रतियोगिता इत्यादि की अधिकता होती है। इससे हमें आनंद मिलता है। त्योहार तथा उत्सव मनाते समय हमें इस बात की सावधानी रखनी चाहिए कि हमारे पर्यावरण को कोई क्षति न पहुँचे। यदि ऊँची आवाज में गीत सुने-सुनाए जाते हैं तो वृद्धों, परीक्षार्थियों और छोटे बच्चों को कष्ट होता है। ऊँची तथा कर्कश ध्वनि से ध्वनि प्रदूषण भी होता है।



क्या तुम जानते हो

महाराष्ट्र में बहुत-सी आदिवासी जनजातियाँ रहती हैं। ठाणे जिले में 'वारली' नामक एक आदिवासी जनजाति पाई जाती है। ज्येष्ठ मास में बरसात के प्रारंभ में उनके यहाँ 'कोली भाजी' (नरम भाजी) नामक एक पारिवारिक त्योहार मनाया जाता है। कोली वास्तव में एक जंगली वनस्पति है, जिसका सब्जी (भाजी) के रूप में उपयोग होता है। बरसात का प्रारंभ होने पर यह वनस्पति उगती है। परिवार के सदस्य अपने आस-पास के परिसर में जाकर ताजा, नरम कोली एकत्र करके लाते हैं। सब्जी तैयार करके देवता को उसका नैवेद्य चढ़ाया जाता है। बाद में परिवार के सभी लोग एक साथ मिलकर भोजन ग्रहण करते हैं।



क्या तुम जानते हो

शीतकाल में मकर संक्रांति नामक उत्सव मनाया जाता है। इस दिन मित्र-रिश्तेदार एक-दूसरे को तिल-गुड़ देते हैं। तिल इस समय पैदा होने वाली एक महत्वपूर्ण फसल है। ठंड के समय शरीर की ऊष्मा (गरमी) बनाए रखने के लिए तिल खाना उत्तम होता है।



हमने क्या सीखा

- * परिवार में हमें सभी प्रकार की सुरक्षा मिलती है।
- * छोटा परिवार, बड़ा परिवार और विस्तारित परिवार, ये परिवार के प्रकार हैं।
- * कई पीढ़ियों से एक वंशावली तैयार हो जाती है।
- * घर के प्रत्येक छोटे-बड़े काम महत्वपूर्ण होते हैं।
- * अपना घर तथा परिसर स्वच्छ रखना चाहिए।
- * हमारे कई उत्सव खेती और पर्यावरण से संबंधित हैं।
- * स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस हमारे राष्ट्रीय पर्व हैं।
- * पर्वो-उत्सवों द्वारा लोगों में एकता की भावना बढ़ती है। इस अवसर पर हम एक-दूसरे से मिलते हैं। परस्पर बातें करते हैं। हमें एक-दूसरे के लिए अपनापन का अनुभव होता है।
- * हम एक-दूसरे के सुख-दुख के सहभागी बनते हैं।



स्वाध्याय

(अ) नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

- (१) परिवार में कौन-सी आवश्यकताएँ पूरी होती हैं ?
- (२) बीमार होने पर हमारी देख-भाल कौन करता है ?
- (३) विस्तारित परिवारों के सदस्य कब एकत्रित होते हैं ?
- (४) उत्सव में किन बातों की अधिकता होती है ?



(आ) सही अथवा गलत, लिखो :

- (१) दुख-कष्ट के समय सभी को एक-दूसरे की सहायता करनी चाहिए।
- (२) घर के सभी काम सब लोगों को बाँटकर करने चाहिए।
- (३) कूड़े को कूड़ेदान में नहीं डालना चाहिए।
- (४) इतनी ऊँची आवाज में गाने नहीं सुनने चाहिए, जिससे ध्वनि प्रदूषण हो।

उपक्रम

- (१) दादी जी और दादा जी के समय के आभूषणों, बरतनों की सूची बनाओ। उनके चित्र भी बनाओ।
- (२) अपने अभिभावक अथवा शिक्षक की सहायता से विभिन्न पर्वों तथा उत्सवों से संबंधित अंतर्कथाएँ सुनो, समझो और उनसे संबंधित जानकारी प्राप्त करो।